

डॉ. डोनाल्ड फाउलर, पुराने नियम की पृष्ठभूमि, व्याख्यान 3, सांस्कृतिक अनिवार्यताओं का विकास: लेखन और राजत्व

© 2024 डॉन फाउलर और टेड हिल्डेब्रांट

यह पुराने नियम की पृष्ठभूमि पर अपने शिक्षण में डॉ. डॉन फाउलर हैं। यह सत्र 3 है, सांस्कृतिक अनिवार्यता, लेखन और राजत्व का विकास।

खैर, मैं आपका पुनः स्वागत करता हूँ। आपके मन में, आप शायद कहीं नहीं गए होंगे, लेकिन मैं गया हूँ। और हम स्थलाकृति पर कुछ टिप्पणियाँ समाप्त करने के लिए वापस आ गए हैं। इस तरह के पाठ्यक्रम में, मुझे सामान्यीकरण में बोलना पड़ता है क्योंकि मेरे पास विद्वतापूर्वक चीजों को ऐसे क्षेत्रों और तरीकों से विकसित करने के लिए बहुत समय नहीं है जो निर्णायक हों।

लेकिन उत्पत्ति 1 और 2 में, जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा और जिस भूमि पर वे रहते थे, बनाई, तो उसने उन्हें इसका प्रभारी बना दिया। धार्मिक अर्थ में, यह उनका आधार नहीं था, यह ईश्वर का था। और वे उसके प्रतिनिधि थे जिन पर परमेश्वर की भूमि की देखभाल करने का आरोप लगाया गया था।

यह आज की दुनिया में उन विषय क्षेत्रों में स्थानांतरित हो गया है जिन्हें हम पारिस्थितिकी कह सकते हैं। मैं उस चीज़ पर बात करना चाहूँगा जो मुझे लगता है कि पारिस्थितिक है: इस भूमि की स्थिति जो भगवान ने अपने लोगों को दी थी।

सहस्राब्दियों से, परमेश्वर जो भूमि इस्राएल को दे रहा था वह एक स्थिति में शुरू हुई और बिल्कुल दूसरी स्थिति में समाप्त हुई। तो, जब हम स्थलाकृति को छोड़ने के लिए तैयार हो रहे हैं तो मेरे विचार यहीं जा रहे हैं। बाइबल लौकिक रूप से बोलती है।

यह वास्तव में एक कनानी कहावत है: दूध और शहद से बहने वाली भूमि। हमारे पास बाइबिल के बाहर वह वाक्यांश है, और यह भूमि का चमकदार शब्दों में वर्णन करता है।

और आज, यदि आप मेरी सलाह का पालन करते हैं और इज़राइल जाने के तरीकों का पता लगाते हैं और आप वहां जाते हैं, तो आप यह देखकर आश्चर्यचकित रह जाएंगे कि ऐसा नहीं लगता कि यह दूध और शहद के साथ बह रहा है। आप केंद्रीय पहाड़ी देश के उन हिस्सों को देख सकते हैं जहां आप गाड़ी चला रहे हैं और यह सचमुच नंगी चट्टान है। और वहां कुछ भी कैसे उग सकता है? इसलिए, मैं आपको यह सुझाव देना चाहूँगा कि किस चीज़ ने इसे एक वांछनीय स्थान से ऐसे स्थान में बदल दिया है जिसका अब पुनर्निर्माण किया जाना है।

इसमें इज़राइली बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। इज़राइल एक विशाल चूना पत्थर के गुंबद पर बैठा है, जिसका अर्थ है कि मिट्टी में उच्च खनिज सामग्री सीधे उस चूना पत्थर के गुंबद से जुड़ी हुई है।

बाढ़ के कुछ समय बाद, जब चीजें बढ़ने लगीं, शायद बाढ़ से पहले वह गुंबद वहां था, शायद नहीं। हमारे पास निश्चित रूप से जानने का कोई तरीका नहीं है। लेकिन शुरुआती वर्षों में वह पेड़ों से आच्छादित क्षेत्र था।

सुलैमान के समय तक, उस भूमि का अधिकांश भाग वनों की कटाई कर चुका था। उन्हें यह नहीं पता था कि मिट्टी को कैल्सीफाई होने से बचाने के लिए जड़ गतिविधि आवश्यक थी। पेड़ों और वनस्पतियों को काटने से ज़मीन पर भारी प्रभाव पड़ा।

यदि मैंने इसे सही ढंग से लिखा है, तो इसके लिए एक तकनीकी शब्द है: मार्ल। इस कैल्सीफिकेशन से एक अत्यंत कठोर चट्टान जैसा आवरण उत्पन्न हुआ जो कभी ऊपरी मिट्टी हुआ करता था।

मैं 1970 के दशक में की गई अपनी पहली यात्रा को कभी नहीं भूलूंगा जब मुझे इस मैदान को देखने का अनुभव हुआ और मैंने सोचा कि कोई इस पर क्यों लड़ेगा। आप 10 मील तक गाड़ी चला सकते हैं और कभी भी कुछ भी बढ़ता हुआ नहीं देख सकते। यह बिल्कुल आश्चर्यजनक था।

प्राचीन काल में जो हुआ वह मार्ल की इस मोटी परत का निर्माण था, जिसे मैंने पहली बार, मेरे आश्चर्य के लिए, यरूशलेम में देखा था। मैं वहां था, और मैंने एक बुलडोजर को जमीन पर काम करते हुए देखा, इसलिए मैंने मान लिया कि मैं आधारशिला को देख रहा हूं। मैं नहीं था।

मैं मार्ल की परत के शीर्ष को देख रहा था। और यह डोजर उस जमीन को हिलाने लगा, और मुझे आश्चर्य हुआ, मार्ल इतना मोटा था, और बुलडोजर उस मार्ल के शीर्ष को खुरच रहा था। और फिर उसके नीचे थी लौकिक टेरा रोज़ा, इस देश की लाल मिट्टी।

जब पेड़ की जड़ें हटा दी गईं, तो इस मार्ल का विकास हुआ और प्रजनन क्षमता का हास हुआ। वास्तव में, जब मैं इस्राएलियों को देखता था, तो आप गाड़ी चला रहे होते थे, और जहाँ तक नज़र जाती थी, आपको केवल गंगी चट्टानें ही दिखाई देती थीं। और फिर अचानक, हमें जंगल दिखाई देंगे।

खैर, हुआ यह था कि इज़रायली भूमि को पुनः प्राप्त करने की कोशिश कर रहे थे, और मार्ल में छेद करके, वे युवा पेड़ लगा रहे थे, और फिर वे युवा पेड़ मार्ल को तोड़ रहे थे और मिट्टी का निर्माण कर रहे थे। तो, देखभाल में विफलता, बेशक, पूर्वजों को यह बिल्कुल समझ में नहीं आया, लेकिन पेड़ों को काटकर, वे मिट्टी के गुणों को काफी नुकसान पहुंचा रहे थे। और निःसंदेह, तब भी, जब पेड़ नहीं होंगे या मिट्टी को बनाए रखने के लिए कुछ जड़ें नहीं होंगी, तो मिट्टी अंततः अपने मूल स्थान पर नहीं, जो पहाड़ियों की चोटी पर होगी, बल्कि नीचे की ओर बह जाएगी।

एक समय में, यह पूरा केंद्रीय पहाड़ी क्षेत्र सीढ़ीदार था, और इस मिट्टी में फसल की बड़ी संभावनाएँ थीं। लेकिन फिर, बाइबिल के बाद के समय में, यह सीढ़ीदार मिट्टी, छतें टूट गईं क्योंकि उनकी देखभाल करने के लिए मनुष्यों की कमी हो गई। और इसलिए, यह सब ईश्वर ने जो कुछ बनाया था उसमें अत्यधिक बाधा डालने की त्रासदी को जन्म दिया।

और इजरायलियों के लिए, यह केवल कृषि भूमि नहीं है जिस पर वे खेती करना चाहते हैं ; यह उनकी मातृभूमि है, और वे इसे पुनः प्राप्त करने के लिए वह सब कुछ कर रहे हैं जो वे कर सकते हैं। और यह एक उत्साहजनक बात है। इसलिए, जब आप वहां जाएं, तो यह याद रखें कि जो मूल रूप से दूध और शहद की भूमि थी, उस पर दोबारा कब्जा किया जा रहा है।

इसे करने में अभी बहुत लंबा समय लगेगा। ठीक है, उस टिप्पणी के साथ, मैं हमें उस स्थान पर ले जा सकता हूँ जहाँ हम अपने विचारों और अपने नोट्स में आगे जा रहे हैं। और वैसे, यह दक्षिणी इराक के उरुक में जिगगुराट के आसपास के इलाके की एक तस्वीर है जो आपके सामने है।

और आप एक अच्छी तस्वीर प्राप्त कर सकते हैं, एक समय में, यह पूरा क्षेत्र सिर्फ हरा-भरा रहा होगा, खेतों से घिरा हुआ होगा। और जब आप जिगगुराट के आसपास के क्षेत्र को देखते हैं, जैसा कि आप देख सकते हैं, यह चंद्रमा के दृश्य जैसा दिखता है। और निस्संदेह, मेसोपोटामिया में मिट्टी के लवणीकरण के साथ यही हुआ।

इसलिए मनुष्य भूमि पर कठोर रहा है। किसी भी दर पर, जिस अवधि के बारे में हम बात कर रहे हैं वह स्थलाकृति को समर्पित है। हम शीघ्रता से आद्य-साक्षरता काल पर नजर डालने जा रहे हैं, जो कि पहला लेखन काल है, 3400 से 29 तक।

और हम जिस बारे में बात करना चाहते हैं वह नई प्रौद्योगिकियों का विकास है जो सीधे तौर पर शहरीकरण से जुड़ी हैं। तुम्हें पता है, इंसान चट्टानों से भी ज्यादा चालाक होते हैं। अब, कभी-कभी आप यह कभी नहीं जान पाएंगे क्योंकि हम भूमि के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

लेकिन वास्तव में, इन शहरी केंद्रों में, जैसे-जैसे आबादी बढ़ी, प्रौद्योगिकियों की आवश्यकता हुई जिससे महत्वपूर्ण नए विकास कारक सामने आए। नए प्रकार के मिट्टी के बर्तन, एक तेज़ कुम्हार का पहिया, सिलेंडर सील, स्मारकीय वास्तुकला, पत्थर की मूर्ति, और सबसे ऊपर, लेखन। यह समय की अपेक्षाकृत संक्षिप्त अवधि में हुआ।

और इसलिए इसे कैसे समझाया जाए? और इसलिए कुछ लोग इसे इस आधार पर समझाने की कोशिश करेंगे कि मेसोपोटामिया में लोगों का नया प्रवासन हुआ होगा। अन्य लोगों ने बताया है कि अधिक संभावना यह है कि यह केवल प्रौद्योगिकी का विकास है जिसकी आवश्यकता है। और इसलिए स्पष्टीकरण जो भी हो, इस विकास की प्रेरणा एक अद्भुत लोगों से आती है जिन्हें सुमेरियन कहा जाता है।

यह एक शब्द है जो बाइबल में आता है। उन्हें सुमेरियन कहा जाता है, लेकिन कभी-कभी उन्हें शिनार की भूमि भी कहा जाता है। और शिनार एक प्रकार से सुमेर शब्द का हिब्रू अपभ्रंश है।

ये दक्षिण के अद्भुत लोग थे। और हम जानते हैं कि मेसोपोटामिया क्षेत्र में अनेक जातियाँ थीं। बड़े पैमाने पर, सुमेरियों ने दक्षिण को नियंत्रित किया।

मध्य और उत्तरी भाग पर सेमाइट्स नामक लोगों का नियंत्रण था। हम जानते हैं कि वहां अन्य जनसंख्या समूह भी थे क्योंकि हमारे पास ऐसे नाम वाले शहर हैं जो न तो सुमेरियन हैं और न ही सेमेटिक। किसी भी दर पर, ये सुमेरियन ही वे लोग हैं जिन पर इस क्षेत्र का सबसे बड़ा ऋण बकाया है।

उनका योगदान, भले ही मौलिक न हो, तकनीकी कौशल को उस स्तर पर ले आया, जिस स्तर पर अब तक नहीं पहुंचा था। पुराना काम सैमुअल नोआ क्रेमर का है। सुमेरियन, जैसा कि आप 1963 की तारीख से देख सकते हैं, वह काफी पुराना है।

और निस्संदेह, बहुत बेहतर चीज़ें हैं जो आज पढ़ी जा सकती हैं। लेकिन इससे स्मारकीय वास्तुकला का जन्म हुआ, जो जिगगुराट था। और यहां उर्क में सबसे पुराने जिगगुराट की एक तस्वीर है, हम सोचते हैं कि यह कैसा दिखता था।

लेकिन जिगगुराट मंदिरों से जुड़े हुए हैं। अपने लंबे इतिहास में, मंदिर एक अद्वितीय संस्था थी जिसका कोई सटीक समकक्ष नहीं है। बाद की तारीख में, मंदिर, जो राजा की सेना के लिए एक सहायक स्रोत था, इसमें तीरंदाजों, घुड़सवार सेना और रथ दल शामिल थे, जो राजा की पेशेवर सेना की ओर से एक इकाई के रूप में लड़ते थे।

इसकी सेना राजा के साथ जा सकती थी, मंदिर परिसर की रक्षा कर सकती थी, पुलिस का काम कर सकती थी और मजदूरों की सुरक्षा कर सकती थी। दूसरे शब्दों में, जिस स्मारकीय वास्तुकला के आसपास मेसोपोटामिया की संस्कृति की उत्पत्ति हुई, वह मंदिर या जिगगुराट था, जो उससे जुड़ा था। इसे आधुनिक दुनिया की किसी भी चीज़ से जोड़ने के लिए मैं बहुत कुछ नहीं कर सकता, सिवाय यह कहने के कि पंथ, यानी मंदिर संरचनाओं, और अदालत, यानी शाही महल, यानी के बीच एक सहजीवी संबंध था। अंतरंग और परस्पर निर्भर दोनों।

किसी को आश्चर्य होता है कि सुलैमान की ओर से पुराने नियम के चित्रों की उच्च संगठित स्थिति में इस उच्च संरचित लेकिन स्वदेशी धार्मिक, सामाजिक घटनाओं को कितना दोहराया जा सकता है। लेकिन मेरा कहना हमें जिगगुराट नामक इस स्मारकीय वास्तुकला पर विचार करने के लिए कह रहा है, जो मंदिर से भी जुड़ा था। जिगगुराट्स बहुमंजिला संरचनाओं के निर्माण के शुरुआती मानव प्रयास का प्रतिनिधित्व करते हैं।

और ऐसा करने के लिए, आपको ईंटों का निर्माण करना होगा। यह एक दिलचस्प घटना है क्योंकि आप सोचेंगे कि ईंट बनाना एक सरल विचार था। एक बार जब आप इस बात को समझ गए तो आपने सोचा होगा कि यह जल्दी ही हो गया होगा।

लेकिन वास्तव में, मैं इसे केवल आपको यह दिखाने के लिए उद्धृत कर रहा हूं कि मिट्टी की ईंट प्रौद्योगिकी एक ऐसी घटना है जो मेसोपोटामिया में हजारों वर्षों से चली आ रही है। तो, यहाँ हम क्या इंगित करेंगे। मडब्रिक तकनीक अपने आप में एक कहानी है, और हम इस पर बहुत अधिक समय खर्च नहीं करेंगे।

हमें यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि पहली ईंटें चौकोर या आयताकार नहीं थीं। वे रोटियों के आकार के थे। और फिर उन्हें एक-दूसरे के ऊपर इस तरह से स्थापित किया गया कि, आपको और मुझे, बिल्कुल विपरीत लगें।

इन ईंटों की संरचना कभी भी मजबूत या सुरक्षित नहीं हो सकती जब तक कि पर्याप्त मात्रा में प्लास्टर न किया गया हो। कल्क, कल्किंग। और निःसंदेह, बिल्कुल वैसा ही हुआ।

इन अंडाकार ईंटों से बनी इमारत को बनाने के लिए उन्हें गंभीर कल्किंग एजेंसियों के साथ आना पड़ा। और इसलिए, मैं उस कल्किंग के बारे में थोड़ी देर में बात करूंगा। लेकिन दूसरी बात, जब उन्हें इन मिट्टी के आकार की ईंटों की अपर्याप्तता का पता चला, तब भी तकनीकी विकास में सैकड़ों साल लग गए, इसलिए उन्होंने ऐसी ईंटें बनाई जो एक तरफ से सपाट थीं, और जैसा कि आप दूसरे मामले में देख सकते हैं, गोल थीं। सबसे ऊपर।

यह वास्तव में एक अद्भुत तकनीक है, जैसा कि सभी ने बताया है, शीर्ष पर अंडाकार आकार की ईंटों से आयताकार आकार की ईंटों तक पहुंचने में लगभग दो सहस्राब्दी लग गईं, जिन्हें नंबर पांच के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। यह सब कुछ ऐसा था जिसे विकसित होने में कई हजार साल लग गए, और इसलिए हम खुद से पूछते हैं, अंडाकार आकार की ईंट से आयताकार ईंट बनने में संभवतः दो हजार साल कैसे लग सकते हैं? इसका उत्तर न तो स्पष्ट है और न ही निश्चित। मेसोपोटामिया में, आप इतिहास के बारे में कुछ इस तरह सोच सकते हैं।

मेसोपोटामिया में सदियाँ निकेल की तरह होती हैं। आप बस अपनी उंगली के सिरे से एक को पलट सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस अंडाकार आकार की तकनीक के इतने लंबे समय तक काम करने का कारण यह था कि यह पहली चीज़ थी जिसके बारे में उन्होंने सोचा था, और उनकी जैसी रूढ़िवादी संस्कृति में, यह 1,500 वर्षों तक जारी रही।

फिर, जब उनके मन में ऐसी ईंटें बनाने का विचार आया जो एक तरफ से चपटी हों, तब भी आयताकार ईंटों तक पहुंचने में कई सौ साल लग गए जिसके बारे में उन्होंने पहले सोचा होगा। यह आकर्षक है, मिट्टी की ईंट प्रौद्योगिकी का विकास। मुझे लगता है यह कुछ इस तरह होगा।

ये ईंटें मानव हाथों द्वारा बनाई गई थीं, और ईंटों को अपारदर्शी सतहों के आकार में बनाना मानव हाथों से चौकोर बनाने की तुलना में बहुत आसान था। वास्तव में, लगभग 2200 ईसा पूर्व तक उन्होंने लकड़ी का रूप बनाकर ईंटों का बड़े पैमाने पर उत्पादन करने का विचार नहीं अपनाया था। एक समय में छह ईंटें इसलिए हो सकती थीं क्योंकि उनके पास लकड़ी नहीं थी।

लकड़ी के ढांचे बनाने के लिए उन्हें लकड़ी का आयात करना पड़ता था, लेकिन फिर उन्होंने इन ईंटों का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया, और फिर क्योंकि वे हाथों से नहीं बनाए गए थे, बल्कि इन लकड़ी के ढांचे के अनुरूप थे, इसलिए ईंटों का निर्माण करना उचित था। मेरे लिए उत्पत्ति के बारे में दिलचस्प बात यह है कि उत्पत्ति की पुस्तक इस तकनीक का एक हिस्सा याद रखती है। जब हम मानव इतिहास में संभवतः सबसे प्रसिद्ध टावर, टावर ऑफ बैबेल पर वापस जाते हैं, तो यह इस घटना को दर्ज करता है।

इसलिए, यदि आप अपनी बाइबिल को उत्पत्ति की पुस्तक में खोलना चाहते हैं, तो मुझे लगता है कि मैं आपको उत्पत्ति अध्याय 11 में यह कहानी दिखा सकता हूँ। यह हमें प्रारंभिक मानवता के बारे में बताती है। उत्पत्ति 11 में, पूरी पृथ्वी पर एक ही भाषा और एक ही शब्द का प्रयोग किया गया था।

और ऐसा हुआ कि जब वे पूर्व की ओर यात्रा कर रहे थे, तो उन्हें शिनार देश में एक मैदान मिला। वह सुमेर होगा। और वे वहीं बस गये।

और उन्होंने एक दूसरे से कहा, आओ, हम ईंटें बनाकर अच्छी तरह जला दें। अब, यह हमें बताता है कि उत्पत्ति 11 की ईंट तकनीक सबसे प्रारंभिक ईंट तकनीक नहीं है क्योंकि उन्होंने लगभग 2200 ईसा पूर्व तक भट्टे का आविष्कार नहीं किया था। तो टावर पहला टावर नहीं है, यह पहली बड़ी संरचना नहीं है, लेकिन यह वह है जिसके परिणामस्वरूप दुनिया का पहला सच्चा टावर बनेगा।

तो, पाठ हमें बताता है कि उन्होंने पत्थर के लिए ईंट का इस्तेमाल किया और मोर्टार के लिए तारकोल का इस्तेमाल किया। खैर, यह मेरे लिए बहुत ही आकर्षक है कि किसी तरह मूसा को इस तरह की जानकारी मिल गई क्योंकि वादा किए गए देश में कहीं भी टार नहीं पाया जाता है, लेकिन टार मिस्र और मेसोपोटामिया दोनों में पाया जा सकता है। और इसलिए, अंडाकार आकार की ईंटों के इस शुरुआती निर्माण में उन्होंने जो किया वह यह था कि उन्हें मिट्टी, पुआल और टार को ट्यूमर द्वारा एक कल्लिंग एजेंसी के लिए जोड़ा गया था।

उन्होंने उन तीनों को एक साथ रखा और उन्हें एक हजार से अधिक वर्षों तक सील करने के लिए उपयोग किया। ये बेढंगी संरचनाएं अंडाकार आकार की ईंटों के आसपास बनाई गई थीं। इसलिए जब तक हम बाबेल के टॉवर पर पहुंचते हैं, तब तक वे इनका उपयोग कर रहे होते थे और लगभग निश्चित रूप से यह मेसोपोटामिया के अनुभव की शुरुआत में नहीं था, बल्कि उसके बाद कहीं था। और उन्होंने कहा, आओ हम एक गुम्मत बनाएं, और फिर उन्होंने कहा, आओ हम एक गुम्मत में अपने लिये एक नगर बनाएं, जिसकी चोटी स्वर्ग तक पहुंचे।

ठीक है, तो उत्पत्ति मिट्टी की ईंट प्रौद्योगिकी के उस चरण को प्रतिबिंबित कर रही है जिसके बारे में बाइबल जानती थी। यह इस बारे में जानता था कि उन्हें इन पहली स्मारकीय संरचनाओं की इमारत को ढकने के लिए कब टार का उपयोग करना था, जो जिगुराट मंदिर की संरचना थी। बाद में, अश्शूरियों ने पत्थर का उपयोग किया क्योंकि, उत्तरी असीरिया में, उनके पास चूना पत्थर तक पहुंच थी, जबकि, मध्य और दक्षिणी हिस्सों में, उनके पास नहीं थी, इसलिए वे केवल मिट्टी की ईंटों से चिपके रहे।

यह दिलचस्प है क्योंकि यह हमें एक तस्वीर देता है कि प्रौद्योगिकी धीरे-धीरे विकसित हुई थी, लेकिन फिर जब इसकी गति बढ़ने लगी, तो यह तेजी से बढ़ी और प्रौद्योगिकी से प्रौद्योगिकी का जन्म हुआ। और एक बार जब उन्होंने कुछ बुनियादी विचारों को पकड़ लिया, तो यह वास्तव में तेजी से फैल गया। और इसलिए, इसे मिट्टी ईंट प्रौद्योगिकी कहा जाता है।

और इसलिए, यह हमें बताता है कि, नहीं, मिस्रवासियों ने एलियंस की मदद से पिरामिड और पत्थर प्रौद्योगिकी के विचार की कल्पना नहीं की थी। वास्तव में, आप मिट्टी की ईंटों का उपयोग करना सीखने की घटना का पता लगा सकते हैं, जो बाद में पत्थर की ईंटें बन गईं। और स्वयं पिरामिडों में, उन्होंने वास्तव में यहां की प्रारंभिक तकनीकों से कलात्मक कार्यों की नकल की।

तो, प्रौद्योगिकी धीरे-धीरे विकसित हुई, लेकिन जब यह विकसित हुई, तो इसने वास्तव में प्रगति की। तो शायद आपको यह जानने में रुचि हो सकती है कि एलियंस उस ईंट तकनीक के लिए ज़िम्मेदार नहीं थे जिसके कारण इन स्मारकीय वास्तुकला संरचनाओं का निर्माण हुआ, जिन्हें ज़िगुराट या मंदिर कहा जाता है। अगली चीज़ जिसके बारे में मैं आपसे तुरंत बात करना चाहता था वह है व्यापार साक्ष्य।

मेसोपोटामिया में कुछ मूलभूत संसाधनों की कमी बहुत पहले से ही लंबी दूरी के व्यापार के केंद्र में रही है। और व्यापार के कारण लेखन का प्रसार हुआ। और लेखन संभवतः सबसे महत्वपूर्ण मानवीय उपलब्धि है क्योंकि इसने प्रौद्योगिकी साझा करने की क्षमता को बढ़ाया है।

और इसलिए, एक बार लेखन का विचार मेसोपोटामिया में आया, एक या दो सौ वर्षों के भीतर, यह संभवतः व्यापार के माध्यम से मिस्र तक फैल गया और, अपेक्षाकृत कम समय के भीतर, पूर्वी एशिया में पहुंच गया क्योंकि लेखन एक ऐसी चीज़ थी जिसे शीघ्रता से स्थानांतरित किया जा सके। अतः, लेखन का आविष्कार और उसका विकास एक आकर्षक विषय क्षेत्र है। तो फिर, हम जिस बारे में बात कर रहे हैं वह वैसा ही लिखना है जैसा हम जानते हैं।

यह असंभव नहीं है कि आदम और हव्वा को ईश्वर ने लिखने का उपहार दिया था। यह असंभव नहीं है कि नूह लिखना जानता था। यदि वास्तव में वे लोग पढ़ना-लिखना जानते थे, तो वह तकनीक खो गई थी और फिर से पाई गई।

आप लेखन के विकास को उसमें देख सकते हैं जिसे मैं चित्रलेख का पहला चरण कहता हूँ। अब, मैं इसे अर्हता प्राप्त करना चाहता हूँ क्योंकि मैं सही हो भी सकता हूँ और नहीं भी। यदि आप इस समय इसका आनंद ले सकते हैं तो यह आपके लिए एक यमक है।

यह पहला कदम हो भी सकता है और नहीं भी। कुछ लोगों का तर्क है कि लेखन एक चित्रलेख के रूप में विकसित नहीं हुआ, बल्कि मिट्टी के गोले में होने वाले आर्थिक काउंटर्स में विकसित हुआ, जिसमें मिट्टी के गोले के बाहर छापें बनाई गईं, और फिर जिन चीज़ों से छाप बनी उन्हें मिट्टी की गेंद के अंदर सील कर दिया गया और वह इससे लेखन के शुरुआती रूपों का जन्म हुआ जो चित्रलेख रहे होंगे क्योंकि मिट्टी की गेंद पर वे छापें एक सॉफ्टबॉल के आकार की थीं, और उनके बाहर जो छापें बनीं वे लिखने के पहले प्रयास हो सकते हैं। वास्तव में जानने का कोई तरीका नहीं है।

हम यह कह सकते हैं कि मेसोपोटामिया में वे एक माध्यम पर लिख रहे थे जिसकी उनके पास असीमित आपूर्ति थी, वह था मिट्टी। और इसलिए, मिस्र की तरह कलात्मक होना बहुत कठिन है जहां वे पपीरी पर लिख रहे थे। वे कलात्मक हो सकते हैं।

उनके पास लेखन के सुंदर रूप हो सकते हैं। मेसोपोटामिया में वे मिट्टी पर लिख रहे थे और इसका सौंदर्यशास्त्र से कोई लेना-देना नहीं है। जैसा कि आप इस चार्ट में देख सकते हैं जिसे मैंने आपके लिए कॉपी किया है, सबसे शुरुआती फॉर्म लगभग 3000 तक जाते हैं; अब हम सोचते हैं कि यह लगभग 3200 या शायद उससे थोड़ा पहले था।

जैसा कि आप देख सकते हैं, ये चित्रलेख हैं। और इसलिए, जैसा कि आप इसे देखते हैं, यहां सबसे ऊपर एक आदमी के सिर और शरीर की तस्वीर है। और चूंकि, इसलिए, यदि आप किसी मनुष्य के बारे में कुछ सौंदर्य संबंधी विचार संप्रेषित करना चाहते हैं, तो आप उसे पूरे शरीर के बजाय केवल सिर के रूप में चित्रित कर सकते हैं।

और यदि, निश्चित रूप से, आप उस व्यक्ति के बारे में बात करना चाहते हैं जो खाने जैसा कुछ अमूर्त काम कर रहा है, तो आप क्या करेंगे कि आप एक चित्रात्मक कटोरे के साथ उसी मानव सिर को चित्रित करेंगे, और आप उस व्यक्ति को शराब पीते या खाते हुए चित्रित कर सकते हैं कटोरा। यदि, उदाहरण के लिए, आप पीने वाले एक इंसान के बारे में बात करना चाहते हैं, तो यहाँ एक नदी की तस्वीर है, जो उनके लिए पानी का एकमात्र प्रकार था। और इसलिए जैसा कि आप यहां नदी की छवि देख सकते हैं, यह एक नदी की तस्वीर है।

लेकिन अगर आप नदी से पानी पीने वाले किसी इंसान के बारे में बात करना चाहते हैं, तो आप एक अमूर्त विचार पर जा सकते हैं जिसमें उन्होंने मानव सिर बनाया, और फिर उन्होंने नदी का चिह्न बनाया, और उन्होंने उन्हें एक साथ रखा, और इसका मतलब है कि आप पानी पी रहे हो. तो, चित्रलेख वस्तुतः चित्र लेखन था, लेकिन चूंकि यह कीचड़ में था, इसलिए यह विशेष रूप से सौंदर्यपूर्ण नहीं था। इसलिए, मिट्टी में चित्र बनाना छोड़ने के लिए, ये चित्रलेख क्यूनिफॉर्म नामक चीज़ में विकसित हुए।

क्यूनिफॉर्म स्टाइलस लकड़ी का एक त्रिकोणीय टुकड़ा होता है जिसे इस प्रकार तराशा जाता है कि त्रिकोण की तीन भुजाएँ होती हैं। उन्होंने अमूर्त या अर्ध-अमूर्त चित्रात्मक चिह्न बनाना सीखा। मुझे लगता है कि आप जो सबसे अच्छा देख सकते हैं वह यहां पानी के लिए है।

जैसा कि आप देख सकते हैं, चित्रलेख दो नदियों की तरह दिखता है, ठीक उसी तरह जैसे यह यहाँ बाईं ओर दिखता है। तो, क्यूनिफॉर्म चिह्न, जो कि क्यूनिफॉर्म एक भाषा नहीं है, यह एक लेखन प्रणाली है और इसका मतलब पच्चर के आकार का है। तो, वे एक वेज के साथ लिख रहे थे, और जैसा कि मैंने कहा, वेज एक त्रिकोण के आकार का है।

यह मूलतः चित्रात्मक था, लेकिन जैसा कि आप देख सकते हैं, यह एक प्रकार का अमूर्त रूप है। यदि आप नीचे की ओर देखें, तो आप देख सकते हैं कि यहाँ किनारे पर जौ का एक बाल कैसा दिखता है।

यह एक चित्रलेख की तरह दिखता है जो थोड़ा-थोड़ा जौ जैसा दिखता है, सिवाय इसके कि यह सिर्फ अपनी तरफ घूमता है। तो, क्यूनिफॉर्म लिपि के शुरुआती रूप में, विश्वास करें या न करें,

यह अभी भी चित्रात्मक था, लेकिन अंततः यह चित्रलेख पहलू से दूर चला जाएगा। तो, इस क्यूनिफॉर्म वेज या स्टाइलस को इस तरह आकार दिया गया।

और इसका मतलब यह है कि यदि आप एक वेज बनाना चाहते हैं, तो आपको बस स्टाइलस के एक तरफ को मिट्टी में दबाना होगा और फिर आपको एक वेज जैसी चीज मिलेगी। यदि आप एक रेखा को खरोचना चाहते हैं या आकार में तकनीकी शब्द, एक पंक्ति का उपयोग करना चाहते हैं, तो आप अपने स्टाइलस के तीन कोनों में से किसी एक का उपयोग कर सकते हैं। इस प्रकार, मेसोपोटामियावासियों ने लेखन का एक ऐसा तरीका बनाया जो पुराने नियम की अवधि के दौरान सभी तरह से चालू रहेगा।

मिट्टी पर लेखन का यह रूप मेसोपोटामिया में ईसा के समय तक जारी रहा। अंतिम कीलाक्षर पट्टिका लगभग ईसा के समय मेसोपोटामिया में बनाई गई थी। यह इस बात का एक और मामला है कि उनकी संस्कृति कितनी रूढ़िवादी थी, यहां तक कि जब उन्होंने लेखन के अन्य रूप सीख लिए थे, जैसे उन्होंने लगभग 1,500 वर्षों तक अंडाकार आकार की ईंटें बनाई, ठीक है, वर्णमाला के आविष्कार के बाद भी, वे अभी भी कार्यरत थे इस प्रकार का लेखन, बोझिल था, क्योंकि यह काम करता था।

यह एक बहुत ही रूढ़िवादी संस्कृति है, हमारी संस्कृति के विपरीत, विशेष रूप से यहां लिबर्टी विश्वविद्यालय में, जहां यदि आपको परिसर का दौरा किए हुए एक महीना हो गया है, तो आपने नवीनतम इमारत नहीं देखी है। और इसलिए हम अपने विश्वविद्यालय के बारे में कहते हैं, एकमात्र स्थिरांक परिवर्तन है। खैर, मेसोपोटामिया में, यह बिल्कुल विपरीत था।

चीजें स्थिर थीं, कभी-कभी हजारों वर्षों तक, क्योंकि यही उनकी संस्कृति की प्रकृति थी। तो, लेखन का यह रूप, जो बोझिल था, फिर भी बहुत लंबे समय तक जारी रहा। तो, पहला चरण चित्रलेख था, और जैसा कि आप देख सकते हैं, चित्र 1,100 साल बाद भी दिखाई देते हैं, ऐसी मेसोपोटामिया की संस्कृति है।

अब, मुझे नहीं लगता कि मैं आपको इसे समझा पाऊंगा, दोस्तों, क्योंकि यह जटिल है, लेकिन चित्रलेख समान नहीं रहते। लेखन में एक और गुण होता है जिसे लॉगोग्राम, या शब्द संकेत कहा जाता है, और इसलिए आइए देखें कि क्या मैं आपके लिए एक गुण निकाल सकता हूं। दूसरे शब्दों में, इनमें से कुछ लॉगोग्राम जारी रहेंगे।

तो, मैं यहाँ किस बारे में बात कर रहा हूँ। यहाँ एक कीलाकार चिन्ह है। ठीक है, वहाँ एक लॉगोग्राम है।

इस लॉगोग्राम में दो संभावित मान हैं। एक तो यह कि यह किसी शब्द का प्रतिनिधित्व कर सकता है। उदाहरण के लिए, यह ईश्वर शब्द के लिए क्यूनिफॉर्म लॉगोग्राम या शब्द चिह्न है।

ठीक है, और इसकी शुरुआत एक चित्रलेख के रूप में हुई। आप संभवतः इसे देख सकते हैं, क्योंकि प्राचीन चित्रात्मक क्यूनिफॉर्म में, यह एक तारे का संकेत था। खैर, प्राचीन दुनिया में, वे सोचते थे कि सितारे सभी देवता थे।

तो, यह इस तरह दिखना शुरू हुआ, और फिर यह एक ऐसी चीज़ में विकसित हुआ जिसमें मूल तारे के साथ एक अस्पष्ट समानता है। और इस प्रकार, यह चिन्ह ईश्वर शब्द के लिए एक लॉगोग्राम के रूप में बना रहा। जब आपने इसे देखा, तो आप क्या करेंगे, आप कहेंगे एलु।

वह भगवान के लिए शब्द था। हालाँकि, यह भाषा बहुत जटिल तरीके से विकसित हुई है, और यदि आप इसे नहीं समझते हैं, तो चिंता न करें, क्योंकि हम इसके साथ अधिक समय तक नहीं रह पाएंगे। मेरा मानना है कि जब आप भाषा जानते हैं तभी आप उसे समझ सकते हैं।

लेकिन आखिरकार, यही कारण है कि शब्दांशीकरण हुआ। इसलिए, यदि मैं इल्युमिनेट जैसा कोई शब्द बनाना चाहता, तो मैं ईश्वर शब्द की ध्वनि ले सकता था, और इल्युमिनेट जैसा शब्द बनाने के लिए इसे कई अक्षरों में उपयोग कर सकता था। तो, जैसा कि आप देख सकते हैं, ध्वनि, इलु, एक शब्दांश है, और इसका ईश्वर शब्द से कोई संबंध नहीं है।

हालाँकि, उन्होंने अंततः अपनी बोली जाने वाली भाषा को लिखित रूप में सीमित कर दिया। इसे शब्दांशीकरण कहा जाता है, और इसकी शुरुआत चित्रलेखों के ध्वन्यात्मक मूल्यों का उपयोग करके हुई।

इस तरह से शब्दांश बनाकर, वे लिखित रूप में एक बोली जाने वाली भाषा बना सकते हैं। यह सब बहुत जटिल है। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि, मान लीजिए, अब्राहम के समय में, एक भाषा उभर रही थी जिसे ओल्ड बेबीलोनियन कहा जाता था, और हम जानते हैं कि उस समय अवधि में, यह लेखन का इतना जटिल रूप था कि 598 अलग-अलग क्यूनिफॉर्म थे संकेत, जिनमें से प्रत्येक को याद रखना पड़ता था।

और उनमें से प्रत्येक, उनमें से अधिकांश के पास कई शब्दांश मान थे, जो इस बात पर निर्भर करता था कि वे एक शब्द में कहाँ थे। तो, मान लीजिए, उदाहरण के लिए, यदि आपके पास 598 अलग-अलग चिह्न हैं, और फिर उनमें से अधिकांश चिह्नों में कई शब्दांश संभावित मान हैं, जो इस पर निर्भर करता है कि वे एक शब्द में कहाँ हैं, तो आपके पास वस्तुतः 5 या 6 या 7 हो सकते हैं हजार संभावनाएँ जिन्हें याद रखने की ज़रूरत है। जाहिर है, यह प्रणाली इतनी जटिल और इतनी बोझिल थी कि केवल पेशेवर ही पढ़ना-लिखना सीख सकते थे।

आज तक, यदि आप पुराने नियम के विद्वान बन रहे हैं, और आपको अक्कादियन लेना है, यह उस भाषा का नाम है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं, यदि आपको अक्कादियन लेना है, तो यह आपकी शिक्षा का सबसे चुनौतीपूर्ण पहलू है, क्योंकि इसे सीखना बहुत कठिन प्रणाली है। संक्षेप में, इस प्रकार की लेखन प्रणाली में इतनी कठिनाइयाँ हैं कि ऐसा लगता है कि यह कहीं नहीं जाने वाला रास्ता है। मुझे बताया गया है कि एशिया में, संकेतों की संख्या 8,000 तक है, जिन्हें सांकेतिक भाषा की समकक्ष प्रणाली का उपयोग करने में सक्षम होने के लिए याद रखना पड़ता है।

तो, मैं आपको जो बात बता रहा हूँ वह यह है कि लेखन का आविष्कार एक शानदार कदम था, लेकिन यह एक ऐसा कदम था जो नाटकीय रूप से सीमित था क्योंकि केवल पेशेवर ही इसे

करना सीख सकते थे। यह वास्तव में वर्णमाला का आविष्कार था जो तकनीकी हस्तांतरण के नाटकीय आविष्कार को जन्म देगा। यह वर्णमाला का आविष्कार था जिसका मतलब था, सैद्धांतिक रूप से, कोई भी, कहीं भी, अपेक्षाकृत सरल प्रारूप में पढ़ना और लिखना सीख सकता था।

तो, यहां हिब्रू भाषा में सबसे प्रारंभिक वर्णमाला कैसी दिखती थी, इसकी एक तस्वीर है। जैसा कि आप बाईं ओर देख सकते हैं, इसकी शुरुआत भी चित्रात्मक रूप में हुई थी। पुरानी हिब्रू के प्राचीन चिन्ह वास्तव में ऐसे चिन्ह हैं जो जानवरों और नदियों आदि जैसी चीजों से मिलते जुलते हैं।

और फिर यह चार्ट हमें दिखाता है कि यह कैसे विकसित हुआ, और यह बाईं ओर इन चित्रलेखों से विकसित हुआ, अंततः वर्गाकार लेखन में जिसे हम अपनी बाइबिल से पहचानते हैं। यह वर्गाकार लेखन वास्तव में लगभग दूसरी या तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व का है और फिर आधुनिक रूप में स्थापित हो गया जिसके बारे में हम जानते हैं, जो यहाँ यह खंड होगा, जो बाइबिल के बाद का है। यह एक बड़ी उपलब्धि थी क्योंकि 30 या उससे कम वर्णमाला उच्चारण चिह्नों को याद करके, आप अपनी पूरी बोली जाने वाली भाषा को कुछ ही मिनटों में एक वर्णमाला में बदल सकते थे।

यह निश्चित रूप से था, मेरे पास निश्चित रूप से जानने का कोई तरीका नहीं है, लेकिन मैं निश्चित रूप से कहूंगा कि यह सबसे बड़ा मानव आविष्कार था क्योंकि इसका मतलब यह था कि प्रत्येक बोली जाने वाली भाषा एक ही वर्णमाला का पालन कर सकती है, और आप एक ही वर्णमाला का उपयोग कर सकते हैं, ताकि प्रत्येक बोली जाने वाली भाषा को मुद्रित रूप में रखा जा सकता है। यह सर्वोत्तम प्रौद्योगिकी हस्तांतरण प्रणाली है। इसका मतलब यह था कि प्रत्येक भाषा को न केवल लिखित रूप में परिवर्तित किया जा सकता है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति अपेक्षाकृत कम समय में उन रूपों को याद कर सकता है।

अच्छी याददाश्त वाला कोई भी व्यक्ति, विशेष रूप से वह व्यक्ति जिसे ग्रीक भाषा आती हो, कुछ ही घंटों में हिब्रू वर्णमाला याद कर सकता है। इस बोझिल क्यूनिफॉर्म प्रणाली के साथ काम करते हुए जीवन भर बिताने के बजाय, आप इसे बहुत कम समय में कर सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि लेखन की प्रेरणा सीधे तौर पर मंदिर को अपने भंडार की सूची बनाने की आवश्यकता से जुड़ी हुई है।

यह मंदिर कर्मि ही थे जिन्हें पहले महान शास्त्र विद्यालय का निर्माण करना था। तो जहाँ तक हम इस विचार के साथ जा सकते हैं, किसी भी प्रारंभिक शहर की सबसे बड़ी आर्थिक इकाई मंदिर थी। मंदिर विश्वविद्यालय, बैंक, सरकार, उन सभी चीजों का संयोजन था जिनके बारे में हम सोचते हैं कि उनकी उत्पत्ति मंदिर से हुई थी।

और ये महान शास्त्र विद्यालय तब मंदिर के चारों ओर घूमते थे। यह गतिविधि की सबसे बड़ी आर्थिक इकाई थी। हालाँकि, यह बहुत दृढ़ता से नहीं कहा जा सकता है कि भूगोल लेखन और सभ्यता के विकास में अंतिम कारक है।

हमारे पास यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि अगर हमें सिरो-लेबनान या लेबनान और इज़राइल में लेखन के विकास के लिए इंतजार करना पड़ता तो कितना समय लगता। लेकिन शहरी केंद्रों के विकास ने स्मारकीय वास्तुकला को जन्म दिया। स्मारकीय वास्तुकला का विकास सबसे पहले मंदिरों में हुआ।

मंदिर शिक्षा और प्रचार-प्रसार के महान केंद्र थे। और अंततः, यह प्रणाली जिसे हम चित्रात्मक लेखन कहते हैं, अंततः वर्णमाला की ओर ले गई, जिसके बाद प्रौद्योगिकी का अभूतपूर्व हस्तांतरण हुआ जिसमें हजारों साल लग जाते थे। अब, यह किसी जानकार लेखक से बस एक सबक ले सकता है।

यह कुछ ऐसा है जिसके अनुरूप भगवान ने स्वयं को तैयार किया है। और जब मैं कहता हूँ कि ईश्वर ने स्वयं को अपने अनुरूप बनाया तो मेरा अभिप्राय यही है। एक संप्रभु ईश्वर ने अपनी दिव्य इच्छा के अनुरूप इस तरह से दुनिया की रचना की, इसलिए इससे लेखन का विकास हुआ, जिससे अंततः वर्णमाला का विकास हुआ, जिससे अंततः ईश्वर द्वारा मनुष्यों से बात करने का विकास हुआ। ऐसे तरीके जो अनोखे थे।

इसलिए, अगर लेखन के बारे में इस पूरी बात में मैंने कुछ ऐसा कहा है जो मुझे लगता है कि महत्वपूर्ण है, तो वह यही होगा। लेखन, वर्णमाला प्रणाली के कारण ईश्वर मनुष्यों से सैद्धांतिक रूप से लिखित रूप में बात करने में सक्षम हो गया, जिसे सामान्य बुद्धि वाला कोई भी व्यक्ति सीख सकता था। यह कोई दुर्घटना नहीं है कि मूसा ठीक उसी समय प्रकट हुए जब वर्णमाला पहली बार प्रकट हुई थी।

यदि निर्गमन की प्रारंभिक तिथि सही है और मूसा ने 1446 में इज़राइल को मिस्र से बाहर निकाला, तो अब हम जानते हैं कि वर्णमाला के प्रारंभिक रूप मूसा से केवल दो से तीन शताब्दी पहले सामने आए थे। और इसलिए, यह जो कर रहा है वह हमें प्रदर्शित कर रहा है कि भगवान ने खुद को उन लोगों के सामने प्रकट करने के लिए चुना जिन्हें हम इज़राइल कहते हैं, लगभग ठीक उसी समय जब वर्णमाला का आविष्कार हुआ था। यह मुझे यह सिद्धांत देने की अनुमति देता है कि ईश्वर ने, मानवीय अनुभव में दिव्य कथा को सम्मिलित करते हुए, ठीक वही समय चुना जब वर्णमाला का आविष्कार किया गया था।

सिनाई पर्वत पर मूसा कानून को वर्णमाला क्रम में लिख सकता था जिसे वस्तुतः कोई भी प्रशिक्षित व्यक्ति पढ़ सकता था। और इसलिए, यह रहस्योद्घाटन को एक दिव्य समयरेखा के साथ जोड़ता है जो सीधे लेखन के आविष्कार से जुड़ा हुआ है। तो, आइए इसे संक्षेप में प्रस्तुत करें, और फिर हम आगे बढ़ेंगे।

हम जो संक्षेप में प्रस्तुत कर रहे हैं वह यह है। 3200 ईसा पूर्व में, लेखन का सबसे प्रारंभिक रूप अस्तित्व में आया। विशिष्ट मेसोपोटामिया शैली में, वर्णमाला का आविष्कार करने में 11 या 1200 वर्ष या उससे अधिक लगेंगे।

वर्णमाला का आविष्कार संभवतः 1700 ईसा पूर्व के आसपास आधुनिक लेबनान या सीरिया में हुआ था। और फिर उसने बाइबिल की दुनिया में प्रौद्योगिकी का विस्फोट कर दिया। और इसके फलस्वरूप परमेश्वर इस्राएलियों को अपना अधिक संपूर्ण वचन प्रकट करने में सक्षम हुआ।

इसलिए, मैं ईश्वर द्वारा मनुष्यों पर अपने दिव्य शब्द प्रकट करने के लिए वर्णमाला के आविष्कार के महत्व को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बता सकता। और हम आज यहां हैं, अभी भी उसी वर्णमाला में हिब्रू भाषा का अध्ययन कर रहे हैं जिसका उपयोग मूसा ने सिनाई पर्वत पर किया होगा। इसलिए, विश्व साहित्य और बाइबिल के लिए लेखन का प्रभाव पर्याप्त है।

और भले ही हम पूरी प्रक्रिया में महारत हासिल नहीं कर पाते क्योंकि यह जटिल है, कम से कम हम आपको एक समयरेखा पर बता सकते हैं कि सिनाई पर्वत पर मूसा दैवीय योजना में बिल्कुल सही समय पर प्रकट हुए थे ताकि मूसा एक भाषा में लिखने में सक्षम हो सकें। सैद्धांतिक रूप से कोई भी समझ सकता था। ठीक है? यह सब एक और अवधि की ओर ले जाता है कि हम तेजी से इब्राहीम के समय अवधि की ओर बढ़ रहे हैं। आद्य-साहित्य काल के बाद के समय को प्रारंभिक राजवंश कहा जाता है।

ठीक है? और हम बहुत अधिक समय तक नहीं रहेंगे, और हम अपनी व्याख्यान प्रणाली के दूसरे अनुभाग में जाने के लिए तैयार हैं। लेकिन प्रारंभिक राजवंश काल प्रारंभिक राजत्व कहने का एक शानदार तरीका है। ठीक है? इसलिए, जो चार्ट मैंने आपके लिए बोर्ड पर रखा है, उसमें टाइपोग्राफी से सिंचाई होती है, सिंचाई से शहरीकरण होता है, शहरीकरण से केंद्रीकरण होता है, केंद्रीकरण से राजत्व होता है, अब हम जो देखते हैं वह यह है कि ये शहर, जैसे वे दिखाई देते थे, ये शहर थे एक नए समाजशास्त्र की ओर बढ़ते हुए, समाजशास्त्र मुख्य रूप से मंदिर के आसपास नहीं, बल्कि मुख्य रूप से महल के आसपास बनाया गया।

यह वस्तुतः स्मारकीय परिणाम का परिवर्तन है। हम इसके बारे में बात करेंगे क्योंकि यह यह इंगित करते हुए दैवीय योजना को उजागर करता है कि यह प्रारंभिक राजवंशीय काल है। यह एक ऐसा समय है जब राजसत्ता विकसित हो रही थी, लेकिन अब यह वंशवादी है क्योंकि हम राजत्व को जैविक रूप से पिता से पुत्र, पोते से परपोते को हस्तांतरित होते हुए देखेंगे।

और यह, मानव इतिहास में एक नाटकीय परिवर्तन भी लाता है, जो बाइबल के सभी पत्रों पर भी मौजूद है, क्योंकि यीशु स्वयं को वंशवादी रूप से डेविड के पुत्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। खैर, यह सब यहीं 29 से 2400 ईसा पूर्व में शुरू होता है। तो यह हमें सबसे पुराने इतिहासलेखन, सुमेरियन राजा सूची की ओर ले जाता है, जो आज तक हमारे पास मौजूद राजवंशीय उत्तराधिकार की सबसे प्रारंभिक सूची है।

इसलिए, इसे सुमेरियन राजा सूची कहा जाता है क्योंकि यह सुमेरियन राजाओं की एक सूची है। और यदि आप मेरी बात मान सकते हैं, तो हम बाइबल और प्राचीन दुनिया के बीच नाटकीय संबंध स्थापित करने के लिए बस आधार तैयार कर रहे हैं। और इसलिए, सुमेरियन राजा सूची एक दस्तावेज़ है जो दो भागों में विभाजित है।

पांच शहरों की पहली सूची जहां बाढ़ से पहले पहली बार राजत्व का अनुभव हुआ था। दूसरे शब्दों में, सुमेरियन राजा सूची राजाओं की एक सूची है, माना जाता है कि बाढ़ से पहले के राजा थे, फिर बड़ी बाढ़ आई थी, और फिर बाढ़ के बाद राजत्व फिर से स्वर्ग से नीचे चला गया था। पहले के पांच शहरों के राजाओं की इस सूची में, कुल आठ एंटीडिलुवियन राजा थे, जिन्होंने गणितीय रूप से संख्याओं की गणना की, तो उन्होंने 241,000 वर्षों तक लिखा।

खैर, हम सभी जानते हैं कि यह पूरी पौराणिक कथा है, और हो सकता है कि संख्याओं का किसी भी तरह से इरादा न हो। हमें बाढ़ से पहले सुमेरियन राजा सूची पर कोई भरोसा नहीं है। चूंकि इसमें राजत्व की सूची दी गई है, हमें लगता है कि यह सिर्फ एक मिथक है।

लेकिन सुमेरियन राजा सूची के दूसरे भाग की कहानी थोड़ी अलग है। दूसरा भाग बाढ़ के बाद राजत्व के अनुभव की एक और शुरुआत की बात करता है। ठीक है।

मुझे देखने दो कि क्या मैं बात स्पष्ट कर सकता हूँ। शायद मैं यहीं रुक जाऊंगा क्योंकि मुझे नहीं पता कि मैं इसके साथ शुरुआत करना चाहता हूँ। यह व्याख्यान के ठीक बीच में अटक जाता है।

यह कक्षा में हर समय होता है, जहाँ आप व्याख्यान के ठीक बीच में पहुँचते हैं और घंटी बजती है। ठीक है, यहाँ घंटी नहीं बजती है, लेकिन आपको स्कूल में याद है जब घंटी बजती थी, सचमुच, और फिर आप अगली कक्षा की अवधि तक रुके रहते हैं। तो मैं जो करूँगा वह इसका परिचय देगा, और फिर शायद हम आगे बढ़ सकते हैं और रुक सकते हैं।

यह हमें जो बता रहा है वह यह है कि प्रारंभिक इतिहासलेखन राजत्व के मुद्दों के इर्द-गिर्द रचा गया है। और इसलिए, सुमेरियन राजा सूची का दूसरा भाग, यह राजाओं की एक सूची है, यह उस चीज़ से शुरू नहीं होती है जिसके साथ हमने शुरुआत की होगी। ठीक है, तो यदि संपूर्ण बाढ़ नष्ट हो गई, तो मानव जाति की शुरुआत कैसे हुई? मानव जाति का विकास कैसे हुआ? मानव जाति कैसे जीवित रही? इसमें इनमें से कोई भी चिंता नहीं है।

इसके बजाय, सुमेरियन राजा की सूची बाढ़ के बाद पहली घटना से शुरू होती है, जब देवताओं ने स्वर्ग से राजत्व को कम कर दिया और इसे मानव जाति को उपहार के रूप में दे दिया। यह रुचि का स्तर है जो बाइबल में हममें से लोगों से भिन्न है, या कम से कम तब तक जब तक हम यह नहीं जानते कि बाइबल वास्तव में हमें क्या सिखा रही है। पाठ हमें बताता है कि सुमेरियन राजा सूची हमें बताती है कि राजत्व का अनुभव सबसे पहले किया गया था, अर्थात्, स्वर्ग से किश शहर में उतारा गया था।

कई वर्षों तक यह सोचा जाता रहा कि यह सब पौराणिक है। हालाँकि, अब हम जानते हैं कि दक्षिणी मेसोपोटामिया के किश शहर और राजत्व के पहले अनुभव के बीच कुछ दिलचस्प संबंध है। इसलिए, हम आगे बढ़ेंगे और यहां थोड़ा विराम लेंगे, लेकिन जैसे ही मैं ऐसा करने के लिए तैयार हो जाऊंगा, मुझे अपनी बात कहने दीजिए। मेसोपोटामिया के लोगों की लेखन में प्रारंभिक रुचि राजत्व के इर्द-गिर्द घूमती थी।

राजत्व उनकी संस्कृति का केंद्र था, और जब हम बाइबिल के रिकॉर्ड में आते हैं तो मैं आपके सामने जो प्रस्ताव रखने जा रहा हूँ वह यह है कि बाइबिल में भी राजत्व ईश्वर की योजना का केंद्र था। तो, यह कुछ ऐसा है जो थोड़ा अलग मोड़ है, लेकिन मुझे विश्वास है कि आपको यह दिलचस्प लगेगा। सुमेरियन राजाओं की सूची में राजत्व तब देवताओं की ओर से मानवता के लिए एक उपहार था।

हमारे लोकतंत्र के कारण, हम राजत्व को उपहार के रूप में सोचने के आदी नहीं हैं। हम स्वयं को प्रतिभाशाली मानते हैं क्योंकि हमने इंग्लैंड के राजा से छुटकारा पा लिया है। प्राचीन विश्व में लोकतंत्र अस्तित्व में नहीं था।

वे राजत्व के बारे में सोचते थे, और उन्हें यह सोचने के लिए प्रशिक्षित किया गया था कि राजत्व देवताओं की ओर से एक उपहार था। मुझे लगता है कि इसके साथ, शायद हम अभी रुक सकते हैं, और हम इसे अपने अगले व्याख्यान में उठाएंगे।

यह पुराने नियम की पृष्ठभूमि पर अपने शिक्षण में डॉ. डॉन फाउलर हैं। यह सत्र 3 है, सांस्कृतिक अनिवार्यता, लेखन और राजत्व का विकास।